ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bimonthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

Impact Factor 3.9

Vol. 4 Issue 6 December 2018

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

प्राचीन काल में महिलाओं के शैक्षिक अधिकारों का विश्लेषणात्मक विवरण : वैदिक काल (1500 ई0पू0 – 600 ई0पू0 तक) के विशेष सन्दर्भ में, एक शोधात्मक अध्ययन

डा0 पद्मजा मिश्रा
प्रवक्ता इतिहास–रूहेलखण्ड डिग्री कालेज,
रौजा, शाहजहाँपुर (उ0प्र0)

Abstract

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'शिक्ष्'' धातु से हुई हैं । जिसका अर्थ होता है ग्रहण करना, अथवा सीखना और सीखाना, अतः शिक्षा एक प्रशिक्षण , सवंर्धन और पथ प्रदर्शन करने वाली प्रक्रिया है । शिक्षा के आभाव में मानव जीवन महत्वहीन है । स्त्री शिक्षा का महत्व प्राचीन काल से ही रहा है जिसमें वैदिक काल में तो अनेक ऋषि कन्यायें वेद पारंगत थी । प्राचीन काल में शिक्षा का माध्यम मुख्यतः धर्म ही था, पूर्व वैदिक काल में स्त्रियों को वेद पढ़ने का पूरा अधिकार था परन्तु उत्तर वैदिक काल तक आते–आते स्त्रियों को जन्मना अपवित्र सिद्ध कर उनसे वैदिक ज्ञान का अधिकार छीना जाने लगा तथा कालान्तर में वैदिक शिक्षा स्त्रियों के लिये निषेध कर दी गई ।

Keywords

प्राचीन काल, स्त्री शिक्षा, शैक्षिक अधिकार, वैदिक काल ।

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

प्राचीन काल में महिलाओं के शैक्षिक अधिकारों का विश्लेषणात्मक विवरण : वैदिक काल (1500 ई0पू0 – 600 ई0पू0 तक) के विशेष सन्दर्भ में, एक शोधात्मक अध्ययन

डा0 पद्मजा मिश्रा
प्रवक्ता इतिहास–रूहेलखण्ड डिग्री कालेज,
रौजा, शाहजहाँपुर (उ0प्र0)

अध्ययन के उद्देश्य

भारतवर्ष में सदा से स्त्रियों का समुचित मान रहा है स्त्रियों को बहुधा 'देवी' नाम से सम्बोधित किया जाता है । देवताओं और महान पुरूषों के साथ उनकी अर्धांगनियों के नाम के नाम भी जुड़े हुये हैं यथा– सीताराम, राधेश्याम, गौरीशंकर, लक्ष्मीनारायण , उमा–महेश, माया–ब्रह्मा, सावित्री–सत्यवान आदि नामों में नारी को पहला और नर को दूसरा स्थान प्राप्त है । पवित्रता , दया, करूणा, सेवा, सहानुभूति, स्नेह, वात्सल्य, उदारता, भक्ति–भावना आदि गुणों में नर की अपेक्षा नारी को सभी विचारवानों ने बड़ा चढ़ा माना है ।

प्राचीन काल में शिक्षा माध्यम मुख्यतः धार्मिक ही था , इस काल में स्त्रियों के सम्पूर्ण संस्कारों (सोलह संस्कार) के साथ ही विद्याध्ययन को भी महत्व दिया जाता था। वेदों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जाता है कि वेदों के मन्त्रदृण्टा जिस प्रकार अनेक ऋषि है, वैसे ही अनेक ऋषिकायें भी हैं।

अतः स्पष्ट है कि वैदिक काल में स्त्रियों को भी शिक्षा, जो कि मुख्यतः धार्मिक शिक्षा थी, को प्राप्त करने का पूरा अधिकार था । प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन समय में भी सम्पूर्ण

'स्त्रीजाति को वैदिक ज्ञान एवं कर्मकाण्ड के ज्ञान को प्राप्त करने का अधिकारी सिद्ध करना है, क्योंकि कुछ विशेष अवसरों को छोड़कर वर्तमान इन्टरनेट युग में भी स्त्रियों को वैदिक ज्ञान का सम्पूर्ण अधिकारी नहीं माना जाता है ।

कठिन शब्द

वैदिक काल (1500ई0पू0–600ई0पू0) – जिस काल में चारों वेदों की रचना हुई । पूर्व वैदिक काल (1500 ई0पू0–1000ई0पू0) – ऋग्वेद का रचनाकाल । उत्तर वैदिक काल (1000ई0पू0 से 600ई0पू0) – यर्जुवेद , सामवेद, अर्थवेद का रचनाकाल । ब्रहंवादिनी – वेदों का प्रवचन करने वाली स्त्री। ब्रह्मचारी – ब्रह्मचारी का अर्थ केवल अविवाहित रहना ही नहीं, ब्रह्मचारी वह है जो संयमपूर्वक वेदों की प्राप्ति में निरत रहता है ।

ईश्वरीय ज्ञान वेद महान आत्मा वाले व्यक्तियों पर प्रकट हुआ है और उन्होंने उन मन्त्रों को प्रकट किया है , इस प्रकार जिन पर वेद प्रकट हुये उन मन्त्र दृष्टाओं को 'ऋषि' कहते हैं । ऋषि केवल पुरूष ही नहीं हुयें वरन् अनेक स्त्रियां भी हुई हैं । ईश्वर ने स्त्रियों के अन्तःकरण में भी उसी प्रकार वेद ज्ञान प्रकाशित किया है जैसे कि पुरूषों के अन्तःकरण में क्योंकि प्रभु के लिये उनकी दोनों ही सन्तानें समान हैं ।

ऋग्वेद 10/85 में सम्पूर्ण मन्त्रों की ऋषिकायें 'सूर्या–सावित्री' है । ऋषि का अर्थ निरूक्त में इस प्रकार है –

''ऋषिदर्शानात् स्तोमान् ददर्शति । ऋषियों मन्त्र दृष्टारः ।''

अर्थात मन्त्रों का दृष्टा उनके रहस्यों को समझकर प्रचार करने वाला ऋषि होता है ।

ऋग्वेद की ऋषिकाओं की सूची वृहद देवताओं के 24वें अध्याय में इस प्रकार है –

घोषा गोधा विश्ववारा, अपालोपनिषन्नित् ।

ब्रह्मजाया जहुर्नाम अगस्त्यस्य स्त्रासादिति ।।

इन्द्रणी चेन्द्रमाता च सरमा रोमशोर्वशी ।

लोपामुद्रा च नघश्च यमी नारी च शाश्वती ।।

श्रीलक्ष्मीः सार्पराजो वाकश्रद्धा मेघा च दक्षिणा ।

रात्रि सूर्या च सावित्री ब्रह्मवादिन्य ईरितः ।।

अर्थात घोषा, गोधा, विश्ववारा, अपाला, उपनिषद, जुहु, अदिति, इन्द्राणी, सरमा, रोमशा, उर्वशी, लोपामुद्रा, यमी, शाश्वती, सूर्या, सावित्री आदि ब्रह्मवादिनी हैं ।

ऐसे अनेक प्रमाण मिलते हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि स्त्रियां भी पुरूषों की तरह यज्ञ करती और कराती थी । वे यज्ञ विद्या और ब्रह्म–विद्या में पारंगत थीं ।

शतपथ ब्रह्मण में याज्ञवल्क्य ऋषि की धर्मपत्नी मैत्रेयी के ब्रह्मवादिनी कहा है ।

तयोर्ह मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी वभूवः ।

अर्थात मैत्रेयी ब्रहम्वादिनी थी । ब्रह्मवादिनी का अर्थ वृहदारण्यक उपनिषद का भाष्य करते हुये श्री शकंराचार्य ने ब्रह्मवादनशील किया है । ब्रह्म का अर्थ है –वेद । ब्रहदमवादनशील अर्थात वेद का प्रवचन करने वाली ।

पूर्वकाल में अनेंक सुप्रसिद्ध ब्रहंचारिणी हुई हैं । जिनकी प्रतिभा और विद्वता की चारों ओर कीर्ती फैली हुई थी । महाभारत में ऐसी अनेक ब्रह्मचारिणियों का वर्णन आता है ।

भारद्वाजस्य दुहिता रूपेण प्रतिभा भुवि ।
श्रुतावती नाम विभोकुमारी ब्रहांचारिणी ।।

– महाभारत शल्य पर्व 48/2

भारद्वाज की श्रुतावती नामक कन्या थी, जो ब्रहंचारिणी थी । कुमारी के साथ साथ ब्रहंचारिणी शब्द लगाने का तत्पर्य यह है कि वह अविवाहित और वेदाध्ययन करने वाली थी ।

यदि वैदिक काल में स्त्रियों के शास्त्राध्ययन पर रोक लगा दी गई होती तो याज्ञवल्क्य और शंकराचार्य से टक्कर लेने वाली स्त्रियां किस प्रकार हो सकती थी ?

अतः स्पष्ट है कि प्राचीन काल में अध्ययन की सभी नर एवं नारियों को समान सुविधा थी । स्त्रियों के यज्ञ का ब्रह्मा बनने तथा उपाध्यक्ष एवं आचार्य होने के प्रमाण मौजूद है । ऋग्वेद में नारी सम्बोधन करके कहा गया है कि तू उत्तम आचरण द्वारा ब्रह्मा को प्राप्त कर सकती है ।

ब्रह्मा वा ऋत्विजाम्भिषक्तमः ।

– शतपथ ब्रहमण

अर्थात ब्रहंमा ऋत्विजों की त्रुटियों को दूर करने वाला होने से सब पुरोहितों से ऊँचा है ।

जब विद्याध्ययन के लिये कन्याओं को पुरूषों की भांति सुविधा थी, तभी इस देश की नारियां गार्गी और मैत्रेयी की तरह विदुषी होती थी ।

जगद्गुरू शंकराचार्य जी ने भारती देवी के साथ शास्त्रार्थ किया था । उस समय भारती देवी ने शंकराचार्य जी से ऐसा अद्भुत शास्त्रार्थ किया था कि बड़े से बड़े विद्वान भी अचंभित रह गये थे । भारती देवी के प्रश्नों का उत्तर देने कें लिये शंकराचार्य को निरूत्तर होकर एक मास की मोहलत मांगनी पड़ी थी ।

शंकर– दिग्विजय में भारती देवी के सम्बन्ध में लिखा है –

सर्वाणि शास्त्राणि षडंग वेदान्
काव्यादिकान् वेत्ति , परञ्च सर्वम् ।
तन्नास्ति नोवेत्ति यदत्र बाला,
तस्यमाद्भूच्चित्र पद जनानाम् ।

शंकर दिग्विजय 3/16

अर्थात भारती देवी सर्वशास्त्र तथा अंगों सहित सब वेदों और काव्यों को जानती थी, इससे बढ़कर श्रेष्ठ और कोई न था ।

निष्कर्ष

उपरोक्त शोध पत्र के अध्ययन से स्पष्ट है कि वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का एवं यज्ञादि क्रियायें करने का अधिकार प्राप्त था ।

मन्त्रों की रचना करने वाली स्त्रियाँ भी 'ऋषि' कहलाती थी परन्तु कलान्तर में कई जगह पर स्त्रियों को अपवित्र कहकर वेद मन्त्र पढ़ना निषेध कर दिया गया, उदाहरण स्वरूप–

स्त्री शूद्रो नाधीयताम् ।
अर्थात स्त्री और शूद्र वेद न पढ़ें ।
न वै कन्या न युवती ।
अर्थात न कन्या पढ़े और न स्त्री पढ़े

इस प्रकार स्त्रियों को शिक्षा ग्रहण करने से रोकने वाले मनगढ़ंत प्रतिबन्धों को अज्ञानी मनुष्य, 'सनातन' मान लेते हैं और उनका समर्थन करने लगते हैं । ऐसे लोगों को यह जानना चाहिये कि प्राचीन साहित्य में इस प्रकार के प्रतिबन्ध कहीं नहीं हैं, वरन उनमें तो सर्वत्र नारी की महानता का वर्णन है और उन्हें भी पुरूषों के समान शिक्षित होने का अधिकार प्राप्त है । यह प्रतिबन्ध तो कुछ काल तक कुछ व्यक्तियों की हीन भावना जो कि उन्हें पुरूष प्रधान समाज में स्त्री के वर्चस्व को स्वीकारने से रोकती है, के परिणाम हैं । ऐसे लोगों ने धर्म ग्रन्थों में जहां तहां अनर्गल श्लोक ठूंसकर अपनी हीनता को ऋषि प्रणीत सिद्ध करने का प्रयत्न किया है ।

मनु ने नारी जाति की महानता को मुक्तकंठ से स्वीकार करते हुये लिखा है –

यत्र नार्यास्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रेतास्तु न पूज्यते सर्वा तत्राफलाः क्रिया ।।

मंत्र 3/56

अर्थात जहां स्त्रियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं और जहां उनका तिरस्कार होता है वहां सब क्रियायें विफल हो जाती हैं ।

महर्षि हारीत ने इन स्त्री द्वेषी, ऊल जलूल उक्तियों का घोर विरोध करते हुये कहा था–

न शूद्रा समाः स्त्रियः नहि शूद्र यौनो ब्राहंण

क्षत्रिय वैश्य जायन्ते तस्माच्छन्दसा स्त्रियः संस्कार्याः

– हारीत

अर्थात स्त्रियां शुद्रो के समान नहीं हो सकतीं । शूद्र योनी से भला ब्राहंण , क्षत्रिय तथा वैश्य की उत्पत्ति किस प्रकार हो सकती है । स्त्रियों को वेद द्वारा सुसंस्कृत करना चाहिये ।

ऋग्वेद में भी स्त्री शिक्षा को प्रमाणित करते हुये कहा गया है कि वेद ज्ञान सबके लिये हैं अर्थात नर तथा नारी सभी के लिये वेदों का ज्ञान आवश्यक है । ईश्वर अपनी संतान को जो संदेश देता है इसे सुनने पर प्रतिबन्ध लगाना ईश्वर के प्रति द्रोह करना है । ऋग्वेद में लिखा है –

समानों मंत्र समिति समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम ।

समानं मन्त्रभिमन्त्रयें वः समाने न वो हविषा जुहोमि ।। – ऋग्वेद 10/151/3

अर्थात हे समस्त नारियों ! तुम्हारे लिये यह मन्त्र समान रूप से दिये गये हैं तथा तुम्हारा परस्पर विचार भी समान रूप से हो तथा तुम्हारी सभायें भी सभी के लिये समान रूप से खुली हों । तुम्हारा मन और चित्त समान मिला हुआ हो , मैं तुम्हें समान रूप से ग्रहण करने के योग्य पदार्थ देता हूँ ।

अतः शोध पत्र के उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्राचीन काल विशेषतः वैदिक काल में स्त्रियों को पुरूषों के समान ही शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त था ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीवास्तव, के.सी. , प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति, इलाहाबाद, 1997, पृ. 812
2. पुस्सालकर ए.डी., मजूमदार ए.के., द वैदिक एज, भारतीय विद्या भवन, मुम्बई , 1996, पृ. 162
3. मजूमदार आर.सी. , राय चौधरी एच.सी. एवं दत्त के., भारत का वृहद इतिहास, भाग – 1, मद्रास, 1954 , पृ. 34
4. बाशम ए.एल., अद्भुत भारत (हिन्दी अनुवाद, द वर्ल्ड दैट वाज़ इण्डिया) अनुवादक वेंकटेश पाण्डये, 1998, पृ. 225
5. झा द्विजेन्द्र नारायण एवं श्रीमाली कृष्ण मोहन, प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 1996 पृ. 161
6. श्री माली के.एम., हिस्ट्री आफ पांचाल , जिल्द 1 पृ. 18
7. महाभारत, आरण्यक पर्व 1 /22 /6
8. पाण्डेय मृणालः स्त्री – देह की राजनीति से देश की राजनीति तक
9. दुबे रामचरण , भारतीय समाज
10. मनु संहिता (टीका)
11. मैकमिलन, पी.एन.चोपड़ा, एस.एस.दास – भारत का सामाजिक , सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास
12. विकास के बढ़ते कदम, शाहजहाँपुर 1987–88, सूचना कार्यालय शाहजहाँपुर ।
13. शाहजहाँपुर गजेटियर, 1987
14. सामवेद टीका , आर्य समाज मन्दिर , टाउनहाल शाहजहाँपुर
15. ऋग्वेद टीका – वही